Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 7, Issue 1&2 - 2022, Pg. No. 1-4
Peer Reviewed Journal

Research Article

खादी ग्रामोद्योग में महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में सोलर चरखा की भूमिका

दीपा देवांगन[1], कीर्ति श्रीवास[2]

[1]सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शा. सुखराम नागे महाविद्यालय, नगरी (सिहावा) जिला–धमतरी।
[2]सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शा. काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय, अभनपुर जिला–रायपुर।

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202201

I N F O

E-mail Id:
kirtisrivas1978@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-1213-0705

Date of Submission: 2022-07-28
Date of Acceptance: 2022-09-07

सारांश

खादी एवं ग्रामोद्योग की ओर से महिलाओं को रोजगार दिलाने की दिशा में चरखे का निरंतर विकास किया जा रहा है। कभी बांस की खपाची से तैयार होने वाला चरखा अब हाईटेक हो गया है सरकार की ओर से भी महिलाओं को सोलर चलित चरखा उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि उन्हें कम श्रम में अधिक लाभ मिल सके वे आसानी से अधिक से अधिक उत्पादन कर सके इसके लिए सूक्ष्म लघु एवं मंजिलें मझोले मंत्रालय की ओर से नई–नई घोषणाएं भी की जा चुकी हैं। सूरत लुधियाना सहित विभिन्न स्थानों पर सोलर चरखा भी तैयार किया जा रहा है और इस सोलर चरखे का विकास सभी राज्यों में खादी उत्पादन को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाने की महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्य बिन्दु: रोजेगार, महिलाएं, सोलर चरखा, आर्थिक विकास

प्रस्तावना

पिछले दिनों प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने खादी को देश में प्रचलित करने का आवाहन किया था। उन्होंने कहा था कि वे चाहते हैं कि खादी देशवासियों के रोजगार का साधन बने 3 अक्टूबर 2014 को अपना रेडियो अभिभाषण ''मन की बात'' में लोगों से खादी का अधिक से अधिक उपयोग करने का निवेदन करते हुए उन्होंने अपनी मंशा जाहिर की कि वह चाहते हैं कि खादी का उपयोग बढे ताकि देश के महिलाओं को राजगार का बड़ा साधन मिल सके। देश में बड़े पैमाने पर सोलर उर्जा चलित चरखे चलाए जाएं यह खासतौर से महिलाओं के लिए होंगे देश में महिलाओं के 10: को इस स्कीम के साथ जोड़कर सशक्तिकरण के अभियान को गति देगी। सोलर चरखे से ना तो पर्यावरण प्रदूषण होगा और ना ही महिलाओं को अधिक श्रम करना पड़ेगा इसके जरिए महिलाओं को 5000 सें 7000 घर बैठे कमा सकते हैं यही वजह है कि महिलाओं में खादी के जरिए रोजगार उपलब्ध कराने के लिए नये – नये प्रयास किए जा रहे हैं सोलर चरखा से महिलाओं में खादी के प्रति लगाव बढ़ा है। हालांकि पहले भी खादी महिलाओं की रोजी – रोटी का साधन हुआ करती थी। हर गांव में सूट कताई में बड़ी संख्या में महिलाएं लगी होती थी यह महिलाएं घर का कामकाज निपटाने के बाद सूत कातती थी। दरअसल सूक्ष्म लघु एवं मझोले उद्यम मंत्रालय खादी निर्माण के साथ महिलाओं को रोजगार दिलाने के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी कदम होगा। सोलर चरखे की इस्तेमाल से निर्माण की लागत में भी कमी आएगी और इससे रोजगार के अवसर भी अधिक से अधिक निकलेंगे पारिश्रमिक एवं उत्पादन में कमी के कारण खादी कार्य को छोड़ने वाले ऐसे गरीब कारीगरों की संख्या में कमी आएगी सोलर चरखा इसके लिए सबसे बेहतर उपाय होगा यह बुनकरों पर तनाव कम उत्पादन बढ़ाने में मददगार साबित होगा साथ ही कारीगर की आय में वृद्धि होगी।

चरखा विकास में लगातार नए प्रयास राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को प्रिय रहा चरखा अब हाथ से नहीं बल्कि सौर उर्जा से चलेगा इस लिए नई तकनीक से ना सिर्फ खादी को बढ़ावा मिलेगा बल्कि ग्रामिण स्तर पर सूत के उत्पादन को भी बढ़ाया जा सकता है। ताप्ती नदी के तट पर बसे सूरत शहर ने इस तकनीकी का उपहार पूरे देश को दिया है सूरत की टैक्सटाइलइंजीनियरिंग एसोसिएशन को इस तकनीक को विकसित करने में सफलता मिली है केंद्र सरकार इस तकनीक की मदद से ग्रामीण इलाकों में खादी कपड़ा निर्माण को और विकसित करने की सोच रही है एसोसिएशन के प्रमुख हेतल भाई मेहता के अनुसार इस तकनीक से बड़े बदलाव होने की उम्मीद है इसे नाचने की गति में बढ़ोतरी होगी बल्कि देश

Copyright (c) 2022: Author(s). Advanced Research Publications

में सौर उर्जा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों को भी सफलता मिल सकती है।

उद्देश्य

1. खादी ग्रामोद्योग में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन
2. बढ़ते हुए सोलर चरखे के उपयोग का खादी उत्पादन में महत्व का अध्ययन।
3. पूरे देश में खादी ग्रामोद्योग में रोजगार कें क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन।

भोध प्रविधि

इस शोधपत्र में तथ्यों के स्पष्टीकरण, विश्लेषण और निष्कर्षों के प्रतिपादन में द्वितीयक संमको का उपयोग किया गया है ।अध्ययन पश्चात इस बात की जानकारी प्राप्त होती है कि खादी ग्रामोद्योग द्वारा संचालित योजनाओं में महिला हितग्राहियों की संख्या में नि. रंतर वृध्दि दर्ज की गई है। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण कार्य से लेकर विभिन्न शोध प्रविधिओं का उपयोग कर सार्थक व बहुपयोगी निष्कर्ष प्राप्त करना है।

साहित्य पुनरावलोकन

1. वैशय एम.सी. आलेख उद्यमिता पत्रिका (अक्टूबर 2007)।

विशयः ''महात्मा गांधी के अर्थिक विचार'' चरखा बेरोजगारी समाप्त करने की कुंजी होने के अतिरिक्त खादी के उत्पादन को बढ़ाने का भी एक अच्छा साधन था।

2. शुक्ला दिनेश इलाहाबाद आलेख उद्यमिता पत्रिका (अक्टूबर 2007)।

विशयः ''खादी संबंधित प्रमुख शिल्प'' खादी उत्पादन में हाथ से कते तथा उनी वस्त्रों के अलावा गृह उपयोगी बहुत सारी वस्तुओं का निर्माण शामिल है सामान्यतया खादी के समस्त उत्पाद सुविध ाजनक सस्ते तथा पर्यावरण के अनुकूल होते है बदलते विश्व के परिपेक्ष में पर्यावरण मित्र के रूप में खादी तथा ग्रामोद्योग उत्पाद का पूरा इंसाफ करते हैं खादी तथा ग्रामोद्योग क्षेत्र में उत्पादों की एक विशाल श्रृंखला प्रचलित की है जो अपनी विशेषताओं की दृष्टि से बेजोड़ है।

3. दुबे उमाशंकर सेडमैप, भोपाल उद्यमिता पत्रिका (जुलाई 2004)।

विशयः ''हथकरघा एवं पावरलूम उद्योगों के सहायता से संचालित प्रमुख योजनाएं'' अत्याधुनिक मशीनों एवं कम्प्यूटर पर आधारित वस्त्र निर्माण के युग में हथकरघा व्दारा उत्पादित वस्त्र प्रदूषण और रासायनिक सामग्री से रहित होते हैं यह उद्योग स्वरोजगार की पर्याप्त संभावनाओं से भरा है बुनकर घर पर अपने परिवार के बीच बैठकर काम कर सकता है महिलाएं भी समय निकालकर घर में ही करघे चला सकती हैं पीढ़ियो से चली आ रही इस व्यवसायिक विद्या को सहेजने एवं उसका उन्नयन करने का उद्देश्य से ग्राम उद्योग विभाग के अंतर्गत आयुक्त हथकरघा एवं हस्तशिल्प संच. ालनालय का गठन किया गया है।

4. अनिल कुमार बी. एच. मुख्य कार्यपालन अधिकारी
खादी एवं ग्रामोद्योग वार्षिक प्रतिवेदन 2013 – 14।

विशयः ''रोजगार सृजन कार्यक्रमों का ग्रामीण क्षेत्रों में योगदान'' कृषि क्षेत्र में कम होती श्रमिक समावेशन क्षमता की पृष्ठभूमि में रोजगार सृजन कार्यक्रम का ध्यान ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के लिए धीरे – धीरे गैर कृषि क्षेत्र की तरफ जा रहा है हमारे देश में कुल श्रमिक संख्या लगभग 18: और ग्रामीण संख्या लगभग 25: गैर कृषि क्षेत्र से संबंधित हैं जो ग्रामीण परिवारों की कुल आय में लगभग एक तिहाई का योगदान देता है।

5. अजबे प्रभाकर कस्तूरबा ग्राम इंदौर आलेख उद्यमिता पत्रिका (अक्टूबर 2007)।

विशयः ''खादी में अनुसंधान एवं विकास'' जब तक संपूर्ण भारत पूर्ण रूप से सुशिक्षित नहीं हो जाता और कृषि पर हमारी निर्भरता समाप्त नहीं हो जाती तब तक ग्रामीण रोजगार के लिए खादी और ग्रामोद्योग के सिवा इसकी कोई गारंटी नहीं है बदलते वक्त के साथ खादी अब उच्च वर्ग की पसंद बन गई हैं इस कारण खादी में रोजगार बढ़ने के साथ पारिश्रमिक बढ़ाने की भी संभावनाएं बलवती हो गई हैं वर्तमान में खादी को प्रोत्साहन की अति आवश्यकता है और खादी से संबंधित मौजूदा आंकड़े देश के व्ययसायिक आकार के मुकाबले बेहद कमजोर हैं।

5. कुमार उमेश, झांसी (उत्तर प्रदेश) आलेख कुरूक्षेत्र पत्रिका (अक्टूबर 2014)।

विशयः ''ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार योजनाओं पर एक नजर'' रा. `जगार से व्यक्ति को जहां कुछ आमदानी होती है वही वह अपना समय बेकार के कामों में ना लगाकर उत्पादन के कामों में लगाता है जिसे व्यक्तिगत उत्थान के साथ देश का भी उत्थान होता है रोजगार के अभाव में व्यक्ति में कुंठा वादिता का जन्म होता है जो उसे गलत रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है ऐसे में यह जरूरी है कि सभी को उचित एवं यथा योग्य रोजगार की सुविधा मुहैया कराई जाए इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार की योजनाएं समय समय पर बनती रही हैं प्रस्तुत लेख में ग्रामीण क्षेत्रों हेतु सरकार द्वारा रोजगार के लिए बनाई गई योजनाओं का मूल्यांकन किया गया है।

चरखे की इतिहास पर एक नजर

चरखे के जरिए सूत तैयार किया जाता है आजादी की लड़ाई के दौरान या आर्थिक स्वालांबन का प्रतीक बन गया था सन् 1916 में साबरमती आश्रम में महात्मा गांधी ने चरखा कातने की शुरूवात की। यह लकड़ी का बना होता था चरखे का व्यास 12 इंच से 24 इंच तक और तकुओ की लंबाई 19 इंच तक होती थी उस समय चरखा बनाने के लिए आंध्र प्रदेश का चिकाकौल गांव प्रसिध्द था वर्धा में सत्याग्रह आश्राम की स्थापना के समय कांग्रस महासमिति ने 20 लाख नए चरखे बनाए। फिर सन् 1923 में काकीनाड़ा कांग्रस के समय अखिल भारत खादी मंडल की स्थापना हुई। सतीश चंद्र दास गुप्त ने चरखे के ही ढंग का बास का चरखा बनाया इसके बाद चरके में कई तरह के बदलाव हुए।

चरखा विकास में लगातार नए – नए प्रयोग

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को प्रिय रहा चरखा अब हाथ से नहीं बल्कि सौर उर्जा से चलेगा इस नई तकनीक से ना सिर्फ खादी को बढ़ावामिलेगा बल्कि ग्रामीण स्तर पर सूट के उत्पादन को भी

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202201

बढ़ाया जा सकता है ताप्ती नदी के तट पर बसे सूरत शहर ने इस तकनीक का उपहार पूरे देश को दिया सूरत की टेक्सटाइल इंजीनियरिंग एसोसिएशन को इस तकनीक को विकसित करने में सफलता मिली केंद्र सरकार इस तकनीक की मद्द से ग्रामीण इलाकों में खादी कपड़ा निर्माण को और विकसित करने की सोच रही है एसोसिएशन के प्रमुख हेतल भाई मेहता के अनुसार इस तकनीक से बड़े बदलाव होने की उम्मीद है इससे ना केवल सूत कातने की गति में बढ़ोतरी होगी बल्कि देश में सौर उर्जा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों में भी सफलता मिल।

सकती है साथ ही सूरत शहर विदेश में सौर उर्जा के इस्तेमाल में स्थापित करने में कामयाब हो सकता है संस्था के अध्यक्ष भाई हेतल मेहता बताया कि सर्वप्रथम उन्होंने अंबर चरखे का अध्ययन कर उसमें और विकास की संभावना तलाशी। हाथ से चलने वाले चरखे की गति अमूमन हजार से डेढ़ हजार आरपीएम जबकि अंबर चरखे की गति 4000 से 4500 आरपीएम होती है सोलर चरखे की गति 11000 से 12000 आरपीएम करने के लिए इसमें स्पीलिडर की संख्या अंबर चरखे से 4 गुना बढ़ाकर 32 की गई। धागे की गुणवत्ता के लिए यार्न पाथ डिजाइन तैयार किया गया शुरूआत में इस चरखे की लागत करीब रू.100000 रखने की कोशिश की गई इसके लिए केंद्र सरकार की ओर से कई तरह की सब्सिडी दिए जाने की योजना भी है चरखा 150 एंपियर की बैटरी से चलेगा, जिसे 7 से 8 घंटे में रेडिएशन आधारित चार्ज किया जा सकता है स्पेयर बैटरी से इसका इस्तेमाल रात दिन किया जा सकेगा।

बैटरी से भी चलेगा चरखा

अंबर चरखा सिर्फ 4500 आरपीएम (रिवॉल्यूशन प्रति मिनट) हाथ चरखा 1500 आरपीएम और सोलर चरखा 12000 आरपीएम की गति से चल सकता है जबकि अंबर चरखा में आठ और सोलर चरखा में 32 स्पिंडल होते हैं इसीलिए सोलर एनर्जी से 150 एंपियर की बैटरी को चार्ज करके उसका उपयोग चरखे में किया जाएगा इस बैटरी का उपयोग लगभग 7 घंटे तक किया जा सकता है और अगर अधिक समय तक चलना हो तो अतिरिक्त बैटरी का इस्तेमाल भी किया जा सकता है चरखे की कीमत लगभग रु.100000 होगी।

महिला उद्यमियों को सहायता पंहुचाने के लिए चलाए जा रहे समग्र विकास कार्यक्रम की स्थिति

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय महिला उद्यमियों को व्यापार संबंधित उद्यमिता सहायता एवं विकास योजना क्रियान्विन कर चुका है इस योजना में महिला उद्यमियों आर्थिक सशक्तिकरण के मद्देनजर उनके उत्पादों, कारोबार और सेवाओं इत्यादि के लिए प्रशिक्षण, जानकारी एवं सलाह प्रदान की जाती है इस योजना के तरह राष्ट्रीयकृत बैंकों की ओर से उन्हें वित्तीय और सरकार की ओर से अनुदान भी दिया जाता है अधिकतम रु.300000 है और उसकी दर अधिकतम 30: है यह ऋण महिलाओं को उनकी क्षमता निर्माण और गैर कृषि कार्यों में स्वतः रोजगार उपक्रमों के लिए दिया जाता है इसके अलावा मंत्रालय महिलाओं के वेतन, रोजगार और आमदनी बढ़ाने की दिशा में उनके कौशल उन्नयन के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाता है महिला कायर योजना के अंतर्गत महिला उद्यमियों को कायरयार्न की बुनाई के लिए, बुनाई मशीनों की खरीद के लिए भी आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है इसमें मशीनीकृत राट्स की खरीद की अधिकतम सीमा 7500 रूपए और मशीनीकृत रोट्स की खरीद की अधिकतम सीमा 3200 रूपए पर 75: सहायता उपलब्ध कराई जाती है। शेष 25: राशि लाभार्थियों द्वारा स्वयं जुटाई जाती है।

खादी ग्रामोद्योग में महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में सोलर चरखा की भूमिका के अध्ययन में प्राथमिक समंक संग्रहण के माध्यम से व्यक्त प्रतिक्रिया का अध्ययन।

खादी ग्रामोद्योग में महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में सोलर चरखा की भूमिका के अध्ययन में प्राथमिक समंक संग्रहण के माध्यम से 44 लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की जिसमें अधिकांशतः 30 – 40 उम्र के लोग हैं लिंग के आधार पर 45 लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की जिसमें 84.4: महिलाएं हैं वह 15.6: पुरूष ने छत्तीसगढ़ के अनेक जिलों के व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया जिसमें सबसे अधिक 15.6: दुर्ग जिले के प्रतिनिधि रहे सोलर चरखा को जानने के बारे में 57.8: लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया की सहमति प्रकट की 42.2: लोगों ने सोलर चरखा के बारे में जानकारी की अनभिज्ञता प्रकट की महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में खादी ग्रामोद्योग की योजनाओं की जानकारी के संबंध में 65.9: लोगों ने अपनी सहमति प्रकट की 34.1: लोगों ने जानकारी का अभाव बताया में पूछे गए प्रश्न या साधारण चरखा की जगह सोलर का उपयोग लाभदाई है इसके संबंध में 44 लोगों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की जिसमें 7: लोगों ने कहा उपयोग लाभदाई है 2.3 प्रतिशत लोगों ने जानकारी का अभाव बताया पर्यावरण पर प्रभाव के संबंध में लोगों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की जिसमें 100: लोगों ने पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव की ओर इंगित किया प्रश्नावली से संबंधित प्रश्न में कि खादी ग्रामोद्योग की योजनाओं से महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है के संबंध में 93.3: लोगों ने कहा कि हां इन योजनाओं से महिलाओं को नया अवसर प्राप्त हुआ है और भागीदारी बढ़ी है 6.7: लोगों ने जानकारी का अभाव बताया महिलाओं को उद्यमी बनाने में देश के विकास पर प्रभाव 100 प्रतिशत सकारात्मक रहा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों के अलावा गैर कृषि कार्यों को बढ़ावा देने के संबंध में 91.1: लोगों ने कहा कि हां गैर कृषि कार्यों को बढ़ावा देना चाहिए इससे महिलाओं को घर पर ही काम करने के अवसर उपलब्ध हो पाएंगे छत्तीसगढ़ राज्य महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में सफल रहा है इसके संबंध में 66.7:ने कहा कि हां महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में सफल रहा है 33.3: लोगों ने जानकारी का अभाव बताया महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने से परिवार के जीवन स्तर पर प्रभाव के संबंध में 97.8 प्रतिशत ने सकारात्मक प्रक्रिया व्यक्त की सोलर चरखा के लिए महिलाओं को प्रशिक्षित करने के संबंध में 100: प्रशिक्षण के माध्यम से जागरूक किया जा सकता ग्रामीण क्षेत्रों में स्व. सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को आगे बढ़ाने के संबंध में 97.1 प्रतिशत लोगों ने सहमति प्रकट की। क्या महिलाओं को आगे बढ़ाने से ग्रामीण विकास संभव होगा के संबंध में उसने कहा

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202201

कि हां ग्रामीण विकास संभव होगा खादी के उत्पादन 100: योगदान दे सकता है यह जानकारी हमें उपलब्ध हुई।

समस्याएं

1. सोलर चरखा उपलब्ध कराने के लिए आवेदकों को आवेदन करना होता है तभी आवेदकों को जरूरी पार्ट्स एवं सोलर प्लेट्स के साथ आधुनिक चरखे लूम्स भी प्रदान किए जाने की बात कही गई है लेकिन इन कारीगरों कीअज्ञानता व आवेदन की प्रक्रिया लंबी होने के कारण यह लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।
2. सोलर चरखा चलाने के लिए कारीगरों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है आवश्यक प्रशिक्षण का अभाव है।
3. सोलर चरखा को संचालित करने के लिए विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है पर्याप्त विशेषज्ञ का अभाव होना इस योजना के संचालन करने में परेशानियों का कारण बनी हुई है।
4. यदी कोई व्यक्ति अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहता है तो उसके पास 2487000 रूपए तक होने की बात कही गई है जो छोटे पैमाने पर व्यापार शुरू करने वाले लोगों के लिए यह बहुत बड़ी समस्या है।

उपाय

1. छोटे पैमाने पर व्यापार शुरू करने वाले लोगों के लिए बहुत बड़ी राशि है किंतु इस योजना के अंतर्गत लाभ पहुंचाने के लिए आवेदकों को कुल खर्च का केवल 10: ही भुगतान करना होगा जबकि 90: अधिकारियों द्वारा प्रदान किए जाएंगे इस प्रकार आवेदकों को रु. 248000 का भुगतान करना होगा और केंद्र अधिकारी 22 लाख 39 हजार रूपए प्रदान करेंगे।
2. सोलर चरखे को चलाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया जाना चाहिए इसके लिए अब सोलर चरखा चलाया जा रहा हैं इसे और अधिक प्रोत्साहित करना चाहिए।
3. सोलर चरखा मिशन 2 सालों के लिए ही लाया गया था इसके और अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए इस योजना को लंबे समय के लिए लागू किया जाना चाहिए।
4. गांव – गांव में स्वयं सहायता संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसीलिए इन संगठनों को इस मिशन को लागू करने में मदद करने के लिए शामिल किया जाना चाहिए।
5. सोलर मिशन कार्यक्रम को चलाने से खादी के कपड़ों को बढ़ावा देकर उन्हें पुनर्जीवित करने के प्रयास के साथ – साथ ग्रीन एनर्जी एवं पर्यावरण फ्रेंडली खादी फैब्रिक विकसित होने की संभावना बढ़ेगी।
6. छोटे पैमाने पर इसे बढ़ावा देना चाहिए इस दिशा में प्रयास करते हुए वे लोगों को शामिल किया जाना चाहिए जो छोटे पैमाने पर मैन्युफैक्चरिंग यूनिट को चलाने में रूचि रखते हो।
7. सभी व्यापार शुरू करने वाले लोगों का माइक्रो स्मॉल एवं मीडियम एंटरप्राइजेज विभाग के साथ रजिस्टर्ड होना आवश्यक है इसके प्रमाण पत्र के बिना उन्हें इसका हिस्सा बनने का लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा इसीलिए इस प्रक्रिया को सरल किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग की ओर से जारी रिपोर्ट
2. संसद में लघु एवं मझोले उद्यम मंत्री की ओर से दिए गए सवालों के जवाब।
3. विभिन्न समाचार पत्रों में समय – समय पर प्रकाशित रिपोर्ट
4. खादी ग्रामोद्योग की वार्षिक रिपोर्ट
5. विषेषांक कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास को समर्पित अक्टूबर 2015

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202201